आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2587 • उदयपुर, सोमवार 24 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

पटना (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 जनवरी 2022 को भारत विकास विकलांग एवं संजय आंनद फाउण्डेशन अन्तर्राज्यीय बस स्टैण्ड के पास पटना में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास विकालांग न्याय एवं संजय आनंद फाउण्डेशन रहा। शिविर में 446 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 187, केलीपर माप 07 व 38 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री नंदकिशोर जी यादव (विधायक महोदय, पटना), अध्यक्षता श्री डॉ.एस.एस. झॉ (पूर्व निःशक्ता आयुक्त), विशिष्ट अतिथि डॉ शिवाजी कुमार जी, डॉ. विमल जी जैन (महामंत्री भारत विकास परिषद), डॉ. अंकित कुमार सिन्हा निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पीएनडो), श्री नरेश जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीष जी हिण्डोनीया (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री कपील जी व्यास (सहायक), श्री संदीप जी भटनागर ने भी सेवायें दी।

कैथल (हरियाणा), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही हैं। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 जनवरी 2022 को हनुमान वाटीका करनाल रोड, कैथल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान शाखा कैथल रहा। शिविर में 625 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 99, केलीपर माप 44, ऑपरेशन चयन 169 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री प्रो. एलएम बिदलिश जी (प्राचार्य आरकेएसडी कॉलेज), अध्यक्षता श्री अनिल जी बिछान (तहसीलदार), विशिष्ट अतिथि श्री विवेक जी गर्ग (शाखा संयोजक कैथल), श्री सतपाल जी मंगला (शाखा संरक्षक), श्री राजेश जी गर्ग,श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री साहिल जी, श्री रामप्रताप जी, डॉ. देवेन्द्र जी (सदस्य), डॉ. राकेश जी बिकासी (ऑर्थोपेडिक सर्जन) केलीपर्स माप टीम श्रीमती चित्रा जी (पीएनडो), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 06 फरवरी 2022 प्रातः 10.00 बजे से

मानव सेवा संघ भवन, पुराना बस स्टेण्ड करनाल - हरियाणा

औरा फार्म मेरिज गार्डन, रेडिशन होटल के सामने, ईश्वर नगर गेट, गुलमोहर, भोपाल (म.प्र.)

स्थान व समय
शनिवार 12 फरवरी 2022
प्रातः 10.00 बजे से

गीता विद्यालय मंदिर, 25-बी, महावीर सोसायटी, पारस सोसायटी के सामने, पी.एन. मार्ग, जामनगर, गुजरात

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ - पांव) माप शिविर
रविवार 30 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

कपीलेश्वर मंदिर व धर्मशाला, बस स्टेण्ड जावल, श्री क्षेत्र माहूर, जिला- नादेड़, महाराष्ट्र

श्रीराम धर्मशाला (मसूदाबाद बस स्टेण्ड के पीछे) रघुवीर पुरी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

जिला चिकित्सालय भीण्ड मध्यप्रदेश

Shri gurudeva Charitable Trust
Founder Mr. Jagdeesh Babu Raparthi, Mangalapuram
Vill. & Post Kothavalasa-535183,
Andhra Pradesh

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

जैसे हैं वैसे ही बढ़े

एक मेंढ़क बड़ी उम्र तपस्या करने लगा। क्षुद्र प्राणी की इतनी प्रबल निष्ठा देखकर भगवान शिव दयार्द्र हो उठे। उन्होंने उससे पूछा– "वत्स! तुझे कोई कष्ट तो नहीं हैं?" मेंढ़क बोला– "भगवन् ! पड़ोस में एक दुष्ट सर्प रहता है, जो मुझे भय देता है। उससे ध्यान में विघ्न पड़ता है। कोई ऐसा उपाय कीजिए, जिससे मेरा भय दूर हो और मैं निश्चिंत मन से तपस्या कर सकूँ।" भगवान शंकर ने मेंढ़क को साँप बना दिया अब उसे दूसरे साँप का भय न रहा परंतु थोड़े दिन में एक नेवला उधर आने लगा। मेंढ़क को फिर भय उत्पन्न हो गया। मेंढ़क ने पुनः भगवान शिव का ध्यान किया तो वे प्रकट हो गए। कारण पूछने पर उसने नई व्यथा सुनाई। भगवान ने उसे नेवला बना दिया। नेवला बना मेंढ़क सुखपूर्वक तप करने लगा।

अब एक वन बिलाव उधर आने लगा और नेवले पर घात लगाने की सोचने लगा। मेंढ़क ने अपनी व्यथा पुनः भगवान शिव के सम्मुख रखी तो भगवान ने उसे वनबिलाव बना दिया। कुछ दिनों बाद सिंह की आँखें वनबिलाव पर लगीं तो शिव जी की कृपा से उसे सिंह का शरीर प्राप्त हो गया। इतने पर भी चैन न मिला। शिकारी अपना जाल और धनुष सँभाले सिंह की घात में फिरने लगा। मेंढ़क ने आर्त्त भाव से शिव जी को पुकारा, जब वे पधारे तो उसने कहा– "प्रभु! मुझे मेंढ़क ही बना दीजिए।" सिंह का शरीर छोड़ पुनः उसी छोटे शरीर में लौटने की इच्छा करने वाले मेंढ़क से आश्चर्यपूर्वक भगवान पशुपति ने पूछा– "ऐसा क्यों?" मेंढ़क बोला– "प्रभु! भय कभी दूर नहीं होता और बाधाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं। जीव जिस स्थिति में है, उसी में कठिनाइयों से साहसपूर्वक लड़ते हुए आगे बढ़ सकता है। ऐसा मैंने समझा है। यह बात सत्य हो तो मुझे अपने असली शरीर में रहकर ही तपस्या करने का वरदान दीजिए।" भगवान शिव संतुष्ट हुए और उसको वही वरदान दिया।

सहारा छोड़ खड़ी हुई जिंदगी

सहेन्द्र बिहार के रोहतास जिले का रहने वाला है और दाएं पैर से निःशक्त था। बचपन से उसकी विज्ञान विषय में बहुत रुचि थी और वह इंजीनियर बनना चाहता था लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। हाई स्कूल पास करते ही उसके सिर से मां का साया उठ गया।

घर की स्थिति बहुत खराब हुई और सहेन्द्र का इंजीनियर बनने का सपना भी टूट गया लेकिन फिर भी उसने हालात के आगे घुटने नहीं टेके और विषम परिस्थितियों के बावजूद भी बीएससी नॉन मेडिकल कर लिया।

फिर उसे सहारा मिला नारायण सेवा संस्थान का जहां आकर उसके पांव का ऑपरेशन हो गया सहेंद्र चाहता है कि जिस तरह नारायण सेवा संस्थान लोगों में खुशियों की सौगात बांट रहा है, उसी तरह वह भी अपने जीवन में इस मुहिम को आगे बढ़ाएगा। वह खुद इंजीनियर नहीं बन पाया लेकिन किसी और के सपनों को साकार करने में जरूर सहयोगी बनेगा और जरूरतमंद छात्रों को निशुल्क कोचिंग करवाकर उनकी सहायता करेगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

धनवान है इतना कभी इंसान निर्धन है,
कभी सुख है, कभी दुख इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में ना घबरावे उसे इंसान कहते हैं,
पराया दर्द अपनाये उसे इंसान कहते हैं।।

कोई पीड़ा ऐसी नहीं जो लम्बे समय तक चलती है। और कोई सुख भी ऐसा नहीं जो लम्बे समय तक चलता हो ये तो धूप–छांव के उलट फेर में हम सबका शक्ति परीक्षण है एक परिवार के मुखिया तीर्थ यात्रा पर साल–दो साल के लिए जा रहे थे। अपने तीनों पुत्रों को चावल की दो–दो मुट्ठी दी कि इसका संवर्धन करना। मैं वापस आऊंगा तो बढ़ा हुआ प्राप्त करना चाहता हूँ।

एक ने कहा दो मुट्ठी दो मुट्ठी चावल का क्या संवर्धन करे। पिताजी साल दो साल बाद आयेंगे बाजार से लाकर के आधा–किलो, एक किलो, दो किलो दे देंगे। पाँच किलो दे देंगे। दूसरे ने कहा पिताजी ने दिया है इनको तिजोरी में रख दो इनकी आरती करो, इनकी अगरबत्ती करो, इनको धूप–दीप करो। तो वैसा रख दिया। और तीसरा बेटा जो बहुत अधिक बुद्धिमान था उसने उन चावलों को बो दिया।

अच्छा खाद दिया, अच्छा पानी दिया और 2 साल में पच्चास गुना चावल हो गये पिताजी को कहा आप बोरा भरलो। आपने दो मुट्ठी चावल दिया अब बोरा भरकर के चावल उग गये। अपने गुणों का अपने को संवर्धन करना चाहिए कैकेयी ने ये नहीं किया, मंथरा ने नहीं किया, लक्ष्मण ने मन में सोचा और ऊपर से बोले इनका कोई दोष नहीं है। और समझ गयी में समझ गयी।

सम्पादकीय

साधना, पूजा तथा ईश्वर भक्ति के लिये हमारा सारा जोर कर्मकाण्ड, मंत्र या पूजा–पद्धति पर रहता है। यह विधान भी है। किन्तु यदि मन में खोट है तो ये सारे उपक्रम निरर्थक हैं। पुण्य के बजाय पाप ही होना है।

परमात्मा को पाने की प्रथम शर्त ही है कि मन की निर्मलता। प्रभु राम ने तो मानस में कहा भी है – 'निर्मल मन जन सो मोही पावा। मोही कपट छल छिद्र न भावा।' इसलिये क्रियाओं का, पद्धतियों का, मंत्रों का अपना महत्व है किन्तु यदि मन में कोई अपेक्षा है या दूसरों के प्रति ईर्ष्या है तो वे सब निष्फल ही होने हैं।

मन की खोट को दूर करने के लिये ही तो व्यक्ति भक्ति–मार्ग का राही बनता है। यदि वह राही होकर भी खोट को ही अपनाये रहे तो फिर कैसे सफलता मिलेगी? मन की खोट को समाप्त करने के लिये अनेक महापुरुषों ने उपाय बताये हैं। इन सबमें से सरलतम उपाय है – सेवा। सेवा करने से अपने जीवन की महत्ता तो समझ में आती ही है किन्तु साथ–साथ मन भी निर्मल होता है। सेवा भी ईश्वरीय भक्ति ही है। सेवा द्वारा मन निर्मल होगा तो परमात्मा प्राप्ति तो होनी ही है।

कुछ काव्यमय

मन में तो भरी है खोट।
दूसरों को पहुँचा रहे चोट।
और भक्त होने का दावा है।
यह तो खुद से छलावा है।
मन की निर्मलता प्रभु से मिलायेगी।
यही मानव का दर्जा दिलायेगी।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

कामयाब चोट

रामचन्द्र जी ने अपने पुत्र सुरेश को लिखा–पढ़ा कर डॉक्टर बनाया। इसके लिए वह स्वयं भूखे पेट रहे, मोटा वस्त्र पहना–गरीबी से साक्षात्कार किया। चिकित्सक बनने के बाद सुरेश पर लक्ष्मी की कृपा हुई। बंगला बनवा लिया, कार खरीद ली, सेवक रख लिये।

एक दिन रामचन्द्र जी बॉल्कनी में बैठे थे। घर के द्वार के निकट कार खड़ी थी, उनका पुत्र कहीं बाहर जाने के लिए तैयार होकर निकला। इतने में एक वृद्धा आई। उसका पुत्र बीमार था। उसने डॉक्टर से कहा कि वह एक बार चल कर उसके पुत्र को देख ले। इलाज के अभाव में उसका बचना मुश्किल हो जाएगा। लेकिन डॉक्टर

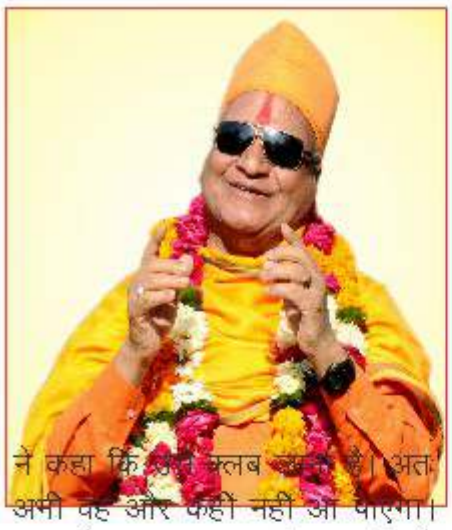

ने कहा कि उसे क्लब जाना है। अतः अभी वह और कहीं नहीं जा पाएगा। वृद्धा ने बहुत अनुनय–विनय की तो डॉक्टर ने पूछा – मेरी फीस के पचास रुपए हैं तेरे पास? वृद्धा ने अपनी लाचारी बताई और कहा कि "अभी तो मेरे पास कुछ नहीं है। बाद में जैसे–तैसे आपका ऋण अवश्य चुका दूंगी।" उसने सुरेश के पैरों पर अपना सिर रख दिया। लेकिन उसने उसे झटक दिया और अपनी कार की ओर बढ़ गया।

इससे पहले कि सुरेश कार में बैठ कर रवाना होता, रामचन्द्र जी दौड़ते हुए वहाँ आए और डॉक्टर के गाल पर एक थप्पड़ मारा। "क्या मैंने तुझे इसलिए डॉक्टर बनाया था कि तू गरीबों का अनादर करे? क्षमा मांग इन वृद्धा माँ से और इनके साथ जा कर इनके पुत्र को उचित दवा दे।

डॉक्टर को कर्तव्य का भाव हो गया है। अब डॉक्टर साहब कहते हैं– "जब भी मेरे सामने कोई गरीब मरीज आता है मेरा हाथ स्वतः अपने गाल पर चला जाता है। शायद आपके और हमारे साथ भी ऐसी चोट कभी हुई हो?

– कैलाश 'मानव'

शब्दों का महत्व

अपेक्षाएँ दुःखों को जन्म देती हैं। हम परिवार के सदस्यों के साथ अधिक मोह एवं आसक्ति रखते हैं, यही मोह व आसक्ति मनुष्य के दुःख का कारण बनती है। मोह में बंधकर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। कर्तव्यों को भूलना नुकसानदायक होने के साथ–साथ कष्टकारक भी होता है।

जिह्वा ही शरीर का सबसे ज्यादा अच्छा और सबसे खराब भाग है। यही शत्रुता और यही मित्रता लाती है। अधिकतर लड़ाई–झगड़े आपसी मतभेद की वजह से कम, लेकिन जिह्वा के अनुचित प्रयोग की वजह से ज्यादा होते हैं। एक बार की बात है, एक राजा अपने सैनिकों और मंत्रियों के साथ किसी स्थान पर भ्रमण कर रहे थे। अचानक राजा को प्यास लगी और उन्होंने अपने सैनिक से पानी लाने को कहा। सैनिक पानी की तालाब में इधर–उधर गया। थोड़ी देर बाद उसे दूर कहीं एक अंधा व्यक्ति पानी के मटके के साथ बैठा मिला। सैनिक उसके पास गया और बोला, "ऐ अंधे! महाराज को प्यास लगी है, पानी दे।"

सैनिक की बात सुनकर अंधे ने सैनिक से कहा, "जाओ, मैं तुम्हें पानी नहीं दूँगा, तुम सैनिक हो, सैनिक ही रहोगे।" सैनिक ने यह बात राजा को बताई। राजा ने अपने मंत्री को अंधे के पास पानी लाने भेजा। मंत्री ने अंधे से कहा, "ओ अंधे महाशय, राजा हेतु पानी दीजिए।" मंत्री की बात सुनकर अंधे ने मंत्री से कहा, "हे मंत्री! तुम कुटिल व्यक्ति हो और मैं कुटिल व्यक्तियों को पानी नहीं देता।"

मंत्री ने सारा वृतान्त राजा को कह सुनाया। इस बार राजा स्वयं उस व्यक्ति के पास गए और कहा, "हे महात्मन्! मुझे प्यास लगी है और मैं आपसे पानी की याचना करता हूँ।"

अंधे व्यक्ति ने सहर्ष राजा को पानी दिया। पानी पीने के पश्चात् राजा ने उससे पूछा, "हे सज्जन पुरुष! यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि आप देख नहीं सकते तथापि आपने सैनिक, मंत्री और मुझे पहचान लिया कि कौन क्या है? आपने उन दोनों को पानी देने से मना कर दिया और आपने मुझे आदरपूर्वक पानी पिलाया।"

राजा की बात सुनकर उस व्यक्ति ने सम्मानपूर्वक कहा, "हे राजन् उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों के आधार पर ही मैं पहचान पाया कि कौन क्या है? निम्न स्तर के शब्दों का प्रयोग निम्न प्राणी ही करता है और सम्मानीय शब्दों का प्रयोग कुलीन व्यक्ति करता है। पानी देने या न देने के पीछे कारण भी, शब्दों का प्रयोग ही है।" शब्दों के द्वारा ही आपकी पहचान होती है। शब्दों में स्नेह और विनम्रता सुनने वाले शत्रु को भी मित्र बना देते हैं तथा शब्दों की कड़वाहट और निष्ठता परिवार के सदस्यों को भी शत्रु बना देती है। अतः शब्दों में क्रोध कभी भी नहीं लाएँ।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

2008 में चंडीगढ़ में शिविर किया, वहां का रोक गार्डन तथा उसके प्रणेता नेकीराम के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। कैलाश की प्रबल इच्छा थी कि एक बार नेकीराम से मिलना हो जाये। वह रोक गार्डन गया तो पता चला कि वहीं एक कमरे में नेकीराम रहते थे। कैलाश उनसे मिल कर गद्गद् हो गया। नेकीराम भी उसे जानते थे, उसके टीवी कार्यक्रम वे अक्सर देखा करते थे।

उसी वर्ष एक दिन दिल्ली से फोन आया। जब बताया कि गृह सचिव का फोन है तो कैलाश ने लपक कर फोन अपने हाथ में लिया। कैलाश ने अपना नाम बताया तो वो बोले गृह सचिव, भारत सरकार बोल रहा हूं, आपसे एक प्रश्न करना चाहता हूं। कैलाश उनकी विनम्रता के आश्चर्यचकित था, बोला– यह मेरा सौभाग्य है कि आपसे बात हो रही है, पूछिये क्या पूछना चाहते हैं। गृह सचिव ने पूछा– यदि राष्ट्रपति जी आपको पद्म श्री सम्मान से अलंकृत करना चाहेंगे तो क्या आप स्वीकारेंगे। कैलाश जी प्रसन्नता का पारावार नहीं था, जिस पल की वह बरसों से प्रतीक्षा कर रहा था वह उसके समक्ष था, उसने तुरन्त जवाब दिया– जी अवश्य।

कैलाश के इतना कहते ही गृह सचिव बोले– अब मेरी बधाई स्वीकार कीजिये। आपको पद्मश्री से अलंकृत करने हेतु चुन लिया गया है। कैलाश ने उन्हें धन्यवाद दिया तो वे बोले– आपसे एक विशेष प्रार्थना है, जब तक इसकी अधिकारिक घोषणा नहीं हो जाती तब तक आप इस जानकारी को अपने तहत ही रखें। उसने जवाब दिया– जी जरूर, इसके पश्चात् उधर से धन्यवाद के साथ फोन रख दिया गया।

कैलाश का मन प्रसन्नता से उछल रहा था मगर यह कैसी मजबूरी कि वह अपनी खुशी किसी से बांट भी नहीं सकता था। कैलाश के स्मृति पटल पर यकायक वह दृश्य उभर आया जब एक मुट्ठी आटा संग्रह करने के दौरान उसकी पुत्री कल्पना रोते हुए घर लौटी थी और उसने उसे पुचकारते हुए कहा था– बेटी एक दिन तेरे ये आंसू फूल बन जायेंगे। उस दिन 25 जनवरी थी, शाम तक तो वैसे भी नामों की घोषणा हो ही जाने वाली थी मगर तब तक यह बात अपने तक ही सीमित रखना उसके लिये मुश्किल सिद्ध हो रहा था। आस पास स्थित लोग जान तो गये थे कि कोई बहुत ही अच्छी खबर आई है, उन्होंने पूछा भी मगर कैलाश हंस कर टाल गया।

अंश - 216

समय की कमी का बहाना छोड़ें

अमरीका के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ चार्ल्स फेफर्मन रोज केवल एक घंटा गणित सीखने का नियम पालते थे और इस नियम पर अंत तक डटे रहकर उन्होंने गणित में महारत हासिल कर ली। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जब कॉलेज जाते थे, तो रास्ते में दुकानदार उन्हें देखकर अपनी घड़ियां ठीक करते थे। वे जानते थे कि विद्यासागर समय से कभी एक मिनट भी आगे–पीछे नहीं चलते। नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया था क्योंकि वहां के सैनिक उनका सामना करने के लिए पांच मिनट देरी से आए थे और वही नेपोलियन वॉटर्स–लू के युद्ध में इसलिए बंदी बना लिए गए थे क्योंकि उनके सेनापति भी मात्र पांच मिनट देरी से आए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी दातुन करने से पूर्व शीशे पर श्रीभगवदगीता का एक श्लोक चिपका लिया करते थे और दातुन करते समय ही उसे याद कर लिया करते थे। समय का सदुपयोग करते हुए उन्होंने गीता के कुल तेरह अध्यायों को कंठस्थ याद कर लिया था। यदि आप स्टूडेंट हैं, तो परीक्षा का यह समय महत्वपूर्ण रहने वाला है, प्रातः जल्दी उठकर दिन की सार्थक शुरूआत करें। मंजिल को हासिल करने वाले कभी देर तक सोया नहीं करते। वे आगे बढ़ते रहते हैं।